Vol 6 Issue 4 May 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 4 | May - 2016

Indian Streams Research Journal

श्रवण प्रशिक्षण : विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थीयों हेतु एक उपागम

भोला विश्वकर्मा

शोध छात्र (Ph.D.) , जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय राजस्थान.

सार–संक्षेप

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में बहुसंवेदी उपागम का एक महत्वपूर्ण अंग श्रवण भी है, जिसके माध्यम से हम अपने आस–पास होने वाले घटनाओं, आवाज व बातचीत को सुन सकते हैं। वर्तमान समय में विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ–साथ सामान्य विद्यार्थियों में भी श्रवण व ध्यान सम्बन्धी समस्या उत्पन्न होने लगी है। प्रस्तुत लेख में शिक्षण–अधिगम में आ रही इस समस्या के समाधान के रूप में श्रवण प्रशिक्षण का उल्लेख किया गया है। यह श्रवण प्रशिक्षण, नैसर्गिक श्रवण का ही परिष्कृत स्वरूप है, इसमें सम्मिलित विभिन्न उपागम व तरीकों का विस्तृत उल्लेख इस लेख में किया गया हैं। श्रवण प्रशिक्षण का विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ–साथ सामान्य विद्यार्थी भी लाभ ले सकते हैं।

कुँजी शब्द– श्रवण प्रशिक्षण, विशिष्ट आवश्यकता, ध्वनि, परम्परागत उपागम।

परिचय–

सुनना, सम्प्रषेण माध्यम की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विकास होता हैं। सुनने का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से मौखिक सम्प्रेषण पर तथा अप्रत्यक्ष रूप से भाषा, सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास पर पड़ता है। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों में कुछ ऐसे बच्चे होते हैं, जो ठीक प्रकार से सुन नहीं सकतें तथा इन्हीं में कुछ ऐसे भी होते हैं, जिनके पास सुनने सम्बनधी कुछ क्षमता बची होती है। इस सम्बन्ध में हुए विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि शरीर के जिस अंग का उपयोग ज्यादा किया जाता है उस अंग का विकास अच्छी प्रकार से होता है, और उपयोग न करने पर उस अंग का विकास रूक जाता है। विकासवाद के इस सिद्धान्त को आधार मानते हुए श्रवण एवं वाणी विशेषज्ञों ने, विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की अवशेष क्षमता का विकास करने के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की है, जिसे श्रवण प्रशिक्षण कहा जाता है। श्रवण प्रशिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बच्चे को वातावरण के समस्त प्रकार की आवाज से परिचय कराना, जानवर, मनुष्य या प्रकृति के आवाज में विभेदन करना, मिलती–जुलती आवाज की पहचान करना तथा आमने–सामने वार्तालाप स्थापित करना सिखाया जाता है। श्रवण प्रशिक्षण प्रदान करने की भिन्न–भिन्न रणनीतियाँ अपनायी जाती है, जो बच्चे की श्रवण क्षमता पर निर्भर करती है।

श्रवण प्रशिक्षण की आवश्यकता–

सामान्यतः यह देखा जाता है, कि सामान्य प्रकार से सुनने वाले व्यक्ति को भी कभी–कभी टेलीफोन की आवाज, रेडियो की आवाज, टी0 वी0 की आवाज अथवा व्यक्ति द्वारा बोली गयी आवाज स्पष्ट रूप से सुनायी नहीं देती है। किसी गीत या संगीत की धुन या लय में विभेदन करने के लिए व्यक्ति आकर्णक का प्रयोग करता है। एक गायक, गायन सीखने वाले की त्रुटियों को सुधारने के लिए सुर, लय एवं ताल के साथ शब्दों के भेद को भी सिखाता है। इस अभ्यास के पश्चात सुनने वाला व्यक्ति शब्द–खण्ड, शब्द एवं वाक्य स्तर पर तैयार हो

पाता है। इस क्रम में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे के लिए सामान्य बच्चे की तुलना में कहीं अधिक अभ्यास की जरूरत होती है। परन्तु ***लेनबर्ग(1967)*** ने कुछ अलग टिप्पणी की है, उनके अनुसार ''मनुष्य दिन–प्रतिदिन की क्रियाओं/कौशलों द्वारा सीखता है, जिसमें औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती।'' ***ब्राउन(1977)*** ने स्पष्ट किया कि बच्चे को नैसर्गिक रूप से श्रवण प्रशिक्षण प्राप्त होता है, परन्तु इसके बावजूद भी मातृ–शिशु सम्बन्ध जैसी पद्धतियों का उपयोग आवश्यक है। ***डॉ. रास(2011)*** ने स्पष्ट किया कि बच्चे को आवश्यकतानुसार श्रवण प्रशिक्षण के विशेष माडल की आवश्यकता होती है। स्वर एवं व्यंजन के मध्य सूक्ष्मतम् विभेदन के लिए ***विश्लेषण पद्धति*** का प्रयोग किये जाने की आवश्यकता है। इसे धरातल उपागम भी कहा जाता है। वाक्य स्तर एवं पराभाषी कौशल विकसित करने के लिए ***संश्लेषण पद्धति*** जिसे ***ऊर्ध्वगामी*** उपागम भी कहा जाता है, का प्रयोग करने की आवश्यकता है। श्रवण प्रशिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए गृह आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी संचालन किया जा रहा है, जिसमें विशेष रूप से ***'श्रवण एवं सम्प्रेषण वृद्धि'*** कार्यक्रम शामिल है। ***स्वीटो एवं हैन्डरसन सैब्स*** ने अध्ययन में पाया कि ***'श्रवण एवं सम्प्रेशण वृद्धि'*** सुनने एवं संचालन पहलू के विकास में सार्थक रूप से उपयोगी है। श्रवण प्रशिक्षण सभी बधिर बच्चों के लिए उपयोगी है, कुछ विशेषज्ञों का यहाँ तक मानना है, कि जिस प्रकार अंगों की शल्य क्रिया के पश्चात् व्यायाम चिकित्सा जरूरी है, उसी प्रकार काक्लियर इम्प्लांट अथवा कान के शल्य क्रिया के पश्चात् श्रवण प्रशिक्षण जरूरी होता है। ***स्वीटो एवं पामर*** द्वारा सन् 1970 से 1996 ई0 तक छः अध्ययनों से पता चलता है, कि श्रवण प्रशिक्षण के द्वारा वाक्–ध्वनि की पहचान करने में सदैव लाभ मिलता है।

श्रवण प्रशिक्षण की परिभाषा–

डॉ. आर्थर बुथ्रायड के अनुसार– ''श्रवण प्रशिक्षण एक औपचारिक रूप से सुनने की क्रिया है, जिसका परम उद्देश्य वाणी प्रत्यक्षण की क्रिया को संचालित करना है।''

परम्परागत उपागम– श्रवण प्रशिक्षण उपागमों में इस उपागम को अधिक सहज एवं लाभदायक माना जाता है। इस उपागम को सर्वप्रथम सन् ***1966*** ई0 में ***हर्ष*** तथा बाद में ***इर्बर*** एवं ***लिंग*** ने सन् ***1976*** ई0 में विकसित किया। इस उपागम को चार चरणों में विभक्त किया गया है।

1.ध्वनि के प्रति जागरूकता– इस उपागम के अन्तर्गत यह कोशिश की जाती है, कि किसी भी तरह से विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे को ध्वनि से परिचित कराना। इस स्तर पर विभिन्न वस्तुओं एवं स्वयं की आवाज निकाली जाती हैं, और बच्चे को सुनायी देने पर हाँथ या उँगली ऊपर उठाने के लिए निर्देश दिया जाता है। इस स्तर पर सबसे महत्वपूर्ण परीक्षण ***'लिंक सेवन साउन्ड टेस्ट'*** को निष्पादित किया जाता है, जिसमें बहुत–निम्न आवृत्ति वाली ध्वनि 'म', निम्न आवृत्ति वाली ध्वनि 'उ', मध्यम आवृत्ति वाली ध्वनि 'ई', 'ओ', 'आ', मध्यम–उच्च आवृत्ति वाली ध्वनि 'ष' तथा बहुत–उच्च आवृत्ति वाली ध्वनि 'स' का उच्चारण करके बच्चे को इन ध्वनियों के प्रति जागरूक करते हैं। गृह आधारित वातावरण में अभिभावक बच्चे के साथ खेल की क्रियाओं में इसे शामिल कर सकते हैं।

2.ध्वनियों के प्रति विभेदीकरण– इस चरण में विभिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न की जाती है, और बच्चे से पूछी जाती है, कि ध्वनियाँ एक जैसी हैं या उनमे अन्तर है। इस स्तर पर मोटी आवाज, जैसे– पुरूष की आवाज, ड्रम(नगाड़ा) की आवाज तथा पतली आवाज, जैसे– स्त्री की आवाज, सीटी की आवाज अथवा घण्टी की आवाज द्वारा ध्वनियों में अन्तर सिखाया जाता है। इसी प्रकार शब्द–खण्ड, शब्द एवं वाक्यांश बोलकर भी विभेद को स्पष्ट किया जा सकता है। अर्थात् ध्वनि की तीव्रता, गुण, सुरीलापन एवं तारत्व के उचित प्रयोग द्वारा ध्वनि विभेदन सिखाया जा सकता है। सुनने में लगभग एक जैसे लगने वाले स्वर एवं व्यंजन के उच्चारण द्वारा विभेदन क्षमता को और अधिक विकसित किया जा सकता है।

3. ध्वनि की पहचान– इस स्तर पर बच्चे को उच्चारित की गयी ध्वनि की पहचान करना होता है। इस क्रिया को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए वाक्–ध्वनि अथवा चित्र एवं शब्दकार्ड का प्रयोग करते हैं। जैसे– श्यामपट्ट पर 'क्', 'क' एवं 'का' लिखकर 'क' का उच्चारण करने पर यदि बच्चा 'क' बताता है, तो यह माना जाता है, कि बच्चा अमुक ध्वनि की पहचान करने में सक्षम है।

4.सूझ व समझ– उपर्युक्त तीनों चरणों में सफलता हासिल कर लेने पर बच्चे में संज्ञानात्मक एवं भषायी स्तर पर समझ विकसित हो जाती है। इस स्तर पर बच्चे से वार्तालाप स्थापित करने की कोशश की जाती है। जिससे बच्चा सुन एवं समझकर प्रश्न का उत्तर या अनुक्रिया प्रकट करता है। सूझ स्तर को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ अन्य महत्वपूर्ण क्रियाओं को भी शामिल किया जा सकता है। जैसे– तस्वीर विवरण या छोटी–छोटी कहानियों में से प्रश्न करना, सामान का अदला–बदली करने के लिए कहना। दैनिक जीवन के क्रिया–कलाप सम्बन्धी सभी महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल करना, जिस वस्तु या घटना को उसने देखा है, उससे सम्बन्धित प्रश्न करना, इत्यादि।

श्रवण प्रशिक्षण में दर्शाये गये सभी चरण अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, परन्तु उनमें भी सबसे महत्वपूर्ण बात बच्चे को ध्वनि के प्रति जागरूक करना अथवा तैयार करना है, क्योंकि आरम्भ में कोई भी बच्चा श्रवण यंत्र पहनने एवं अपरिचित व्यक्ति या शिक्षक के साथ सहयोग नहीं करता है। बच्चे का सहयोग प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रेरणात्मक उपाय एवं पुनर्बलन का प्रयोग किया जाना आवश्यक होता है। इसलिए श्रवण प्रशिक्षण पर सफलता प्राप्त करने के लिए प्रथम चरण पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है।

श्रवण प्रशिक्षण की सफलता के उपाय– किसी भी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कुछ निश्चित रणनीतियों का उपयोग किया जाता है, इसी क्रम में श्रवण प्रशिक्षण को सफल बनाने के लिए निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना अतिआवश्यक है–

1.अभिभावक सहयोग– बच्चे के पुनर्वास कार्यक्रम में अभिभावक एवं चिकित्सक/शिक्षक की सहभागिता समान होती है, इसलिए सुझाये गये कार्यक्रम एवं गृह आधारित कार्यक्रम एवं गृह कार्य का सम्पादन घर में अभिभावक द्वारा किये जाने से बच्चे के व्यवहार में वांछित परिवर्तन होने के अवसर अधिक होते हैं।

2.शिक्षक की दक्षता– सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से लगभग सभी शिक्षक परिपूर्ण होते हैं, परन्तु उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। अनुभव के आधार पर कार्य के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता जाता है। एक कुशल शिक्षक किसी न किसी उपागम एवं रणनीति का उपयोग करके बच्चे में

सुधार ला सकता है।

3.शिक्षक की जिम्मेदारी– शिक्षक या पुनर्वास व्यावसायिक यदि तत्परता के साथ शिक्षा अथवा प्रशिक्षण का कार्य करते हैं, तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

4.उचित श्रवण उपकरण– श्रवण यंत्र की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बच्चे की क्षमता के अनुकूल श्रवण यंत्र न होने पर शिक्षक द्वारा किये गये पूरे प्रयास निरर्थक सबित हो सकते हैं। इसलिए बच्चे की क्षमता एवं उपयुक्तता के आधार पर श्रवण यंत्र का चयन करना आवश्यक है।

5.उद्दीप्त वातावरण– बच्चे को मनमोहक लगने वाले वातावरण(कक्षा–कक्ष) की व्यवस्था बच्चे को बैठने एवं सीखने के लिए विशेष रूप से प्रेरित करती है। इस प्रकार भय मुक्त वातावरण में वांछित परिवर्तन की सम्भावना बढ़ जाती है।

सारांश– श्रवण प्रशिक्षण एक वृहद कार्यक्रम है, जो घर, विद्यालय एवं संस्था में संचालित किया जा सकता है। परन्तु इसके उचित संचालन के लिए आवश्यक उपकरण एवं वातावरण का भी होना आवश्यक है। श्रवण प्रशिक्षण की सबसे बड़ी चुनौती उचित श्रवण यंत्र का चुनाव एवं बच्चे द्वारा श्रवण यंत्र की स्वीकृति। प्रारम्भ में जब बच्चा यंत्र धारण करता है, तो उसके द्वारा सुनी गयी आवाज अलग होती है, और श्रवण यंत्र बच्चे को एक भार सा महसूस होता है। इसलिए श्रवण यंत्र के साथ बच्चे का समायोजन होने में समय लगता है। उपरोक्त में दर्शायी गयी विधि के अलावा भी श्रवण प्रशिक्षण की अन्य विधियाँ हैं, परन्तु उन्हें बहुत कम शिक्षक अपनाते हैं। उपरोक्त में बहुत से अध्ययन भी शामिल किये गये हैं, जो सिद्ध करते हैं, कि श्रवण प्रशिक्षण द्वारा सदैव वाणी विकास एवं श्रवण प्रक्रिया में सार्थक परिणाम प्राप्त होता है। परन्तु प्रभावशाली परिणाम प्राप्त करने के लिए माता–पिता, अभिरक्षक, शिक्षक एवं वाणी चिकित्सक की भूमिका सक्रिय होना आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची–

1.नूर्स (1996), एन्टीसीपेशन आफ डेफ एण्ड हार्ड आफ हियरिंग स्टूडेन्स इन क्लासेस विद हियरिंग स्टूडेन्स, जर्नल आफ डेफ स्टडीस एण्ड डेफ एजूकेशन, पृष्ठ 191–202

2.बेस एवं हम्स (1995), इनहान्सिंग कम्यूनिकेशन स्कील्स आफ डेफ एण्ड हार्ड आफ हियरिंग चिल्ड्रेन इन मेनस्ट्रीम, थामसन डेल्मर लर्निंग–न्यूयार्क, पृष्ठ 152–174

3.रिहैबिलिटेशन काउंसिल आफ इंडिया (1992), डिसेबिलिटि स्टेटस आफ इंडिया– नई दिल्ली

4.डोडग एट आल (1984), दि स्पोकेन लैंगवेज आफ टिचर एण्ड पूपिल्स इन दि एजूकेशन आफ हियरिंग इम्पेयरमेंट चिल्ड्रेन, जर्नल आफ वोल्टा रिव्यू, पृष्ठ 5–9

5.डेविस (1970), ग्लोबल लैंग्वेज, प्रोग्रेस विथ ऐन ऑडीटरी वर्बल एप्रोच फार चिल्ड्रेन हू आर डेफ आर हार्ड आफ हियरिंग, जर्नल आफ वोल्टा रिव्यू, पृष्ठ 12–20

भोला विश्वकर्मा
शोध छात्र (Ph.D.) , *जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय*
राजस्थान.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org